यहाँ एक नदी बहती थी ।

मुझे जानती नहीं
कैसे तुम पैदा हुआ,
कब तुम पैदा हुआ,
सिर्फ एक बात जानती हूँ
तुम भी एक नदी थी
तुम भी यहाँ बहती थी ।

छोटे बच्चों के लिए
तू ही है बचपन,
पढ़ते छात्रों के लिए
तू ही है दोस्त,
सभी बूढ़ों के लिए
तू ही है आश्रय ।

सब जानवरों के लिए
तू ही है वरदान,
सब पक्षियों के लिए
तू ही है आसमान,
सब जीव-जन्तुओं के लिए
तू ही है भगवान ।

लड़ते लोगों के बीच
शांति की पानी देती नहीं है तू।
चिल्लाते लोगों के बीच
स्नेह की पानी देती नहीं है तू।
रोते लोगों के बीच
खुशी की पानी देती नहीं है तू।

तुम्हारी माँ कौन है?
तुम्हारी बाप कौन है?
सिर्फ ईश्वर को चाहते है।
मगर एक बात जानती हूँ
तुम्हारी पानी में सिर्फ
प्यार, मदद और खुशी के बूँदें है।

कौन बनी तू शराबी?
कौन बनी तू शिकस्त?
कौन आपको मारकर डाला?
कौन आपको समाप्त किया?
सिर्फ एक ही जवाब
'मानव समाज'।

भ्रष्टाचार से भय,
आतंकवाद से भय,
बालश्रम से भय,
बेकारी से भय,
मानव समाज बनी न
खराबी।

क्रोध से लड़ते,
दर्द से रोते,
भूख से चिल्लाते,
डर से भागते,
मानव समाज बनी न
विकल्प।

आज है जो नीति
जिसमें भरी अनीति
वो है हमारी राजनीति।
नेता भरते अधिकारी
रो रही है गरीबी
देश की बड़ी चुनौती।

छोड़ दिया एकता
स्वीकार किया असमानता.
घिर गई हमारी समाज
डर देती अंधकार में ।
हे भगवान, आपको सब जानते हैं,
लेकिन ऐसे क्यों होने दे?

सब के अंत में
एक बात कहना चाहता हूँ,
माँफ करो भगवान
माँफ करो मानव समाज को
गलती थी ये हमारी
गलती थी ये हमारी ।

विद्रोह से झुलनेवाले
दुख से झुलनेवाले
मानव समाज, ये सोचो
हमारी हालत ऐसी चली तो
हमको देख सकता है
सब का 'सर्वनाश'!।

हे भगवान, वापस दे हमारी खुशी
वापस दे हमारी संतोष ।